International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

'रामरंग' जी की बंदिशों में : भगवान राम

डॉ0 इभा सिरोठिया

एसोसिएट प्रोफेसर सं0 गायन

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज,

इलाहाबाद

अनादि काल से आध्यात्म तथा संगीत का संबंध भारतीय परम्परा का आधार रहा है। भक्ति संगीत का प्राचीनतम ग्रंथ 'सामवेद' है। संगीत की महत्ता को स्वीकार करने के कारण ही इन स्तुति परक मंत्रों को संगीतात्मक रूप प्रदान किया गया है। संगीत और काव्य दोनों की उत्पति नाद से हुई है। आकाश का गुण शब्द है जो वाक तत्व है ये संगीत और काव्य दोनों का आधार है।

सामगान की ऋचाओं को शास्त्रीय संगीत में गीतियों, प्रबन्ध और ध्रुवपद आदि के रूप में धीरे–धीरे परिवर्तित अवस्था में जातियों, गीतियों, प्रबन्ध और ध्रुवपद आदि के रूप में भी संगीत भगवत् आराधना का माध्यम बना रहा।[1]

संगीत का मुख्य लक्ष्य है रस परिपाक या रसात्मकता। भाव तथा रस की प्रधानता संगीत में रहती है। भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों ही रस सृष्टि का आधार है। भाव प्रदर्शन में गायक अपने हृदयगत भावों पर आश्रित रहता है। अर्थात् कल्पना शक्ति द्वारा हृदयगत भावों को स्वरों और शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है।

गुरूवर पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' जी की अमर कृतियाँ– अभिनव गीता◆जलि पाँचों भागों एवं डॉ0 गीता बनर्जी की पुस्तकें रागशास्त्र के दोनों भागों में दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि पं0 झा जी की रचनाओं में भगवान श्री रामचन्द्र जी की सम्पूर्ण जीवन लीलाओं को उन्होंने अपनी बंदिशों में विशेष स्थान दिया है। उनके कथनानुसार– ''मेरे द्वारा सभी सांगीतिक कार्य भगवत प्रदत्त और गुरूजनों के आशीर्वाद का ही परिणाम है इस हेतु अपने इन सभी सांगीतिक सेवाओं को भगवान श्रीराम एवं गुरूजनों को समर्पित कर रहा हूँ :–

''राम कृपा से लिखे सबहि, संगीत राग स्वर दर्पण।

'रामरंग' यह लेखन सब विधि, गुरू गोविन्द को अर्पण।।[2]

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वस्तुतः निश्चित रूप से पंडित जी भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त थे उनकी राम की भक्ति का परिणाम है उनकी बंदिशों में राम चरित यत्र तत्र सर्वत्र उपस्थित है। गोस्वामी जी के अनुसार 'जा पर कृपा राम कर होई ता पर कृपा करै सब कोई'। संभवतः पं0 रामाश्रय झा **'रामरंग'** जी का जनमानस में महत्त्वपूर्ण स्थान बना पाना उनकी बंदिशों की अभूतपूर्व लोकप्रियता का प्रमुख कारण शब्द संयोजना के साथ–साथ शब्दों में निहित रामभक्ति ही है। प्रभु श्रीराम जन्म के अवसर पर उनकी रचना :–

राग बिलासखानी तोड़ी–चौताल

स्थायी– आनंद भयो नगर धूम धाम है डगर

प्रगटे दशरथ घर तीन लोक ठाकुरे

अन्तरा– राम, भरत, लखन, शत्रुघ्न शत्रु हनन

सुरनर मुनि परमानन्द निरखि बालबांकुरे।[3]

राग बिलासखानी तोड़ी– एकताल द्रुत

स्थायी– जुगन जीवें लाल चारों तेरो ही

माई मोहे देहो दान दरसन को।

अन्तरा– राम लखन भरत रिपु दमन चरण

रामरंग चाहे परसन को।[4]

राग–राम साख – चौताल

स्थायी– आज तो बधाई माई, भवन भवन बाजि रहै

महाराज दसरथ गृह प्रगटे सुख धाम।

अन्तरा– रनबासे अति आनन्द, निरखि वदन अवन चन्द

पुनि–पुनि उर लावत, सुख पावन सब बाम।[5]

राग–राम प्रिया – एकताल विलम्बित

स्थायी– बाजत बाजा बधाई को भवन–भवन

दसरथ नृप पायो सुत सुख धाम

अन्तरा– अखिल भुवन पति आये बन सुत रामरंग

निरखि सुख पावे सब बाम।[6]

उपर्युक्त बंदिशों में पं0 रामाश्रय झा जी ने भगवान राम को जन्म से ही तीनों लोकों के तारण हार एवं आराध्य के रूप में स्थापित किया। प्रभु श्रीराम के जन्म के पश्चात् पं0 झा जी की बंदिशों में राम को गुरू विश्वामिश्र द्वारा वन गमन एवं असुरों के संहार के पश्चात् राजा जनक जी द्वारा आयोजित धनुष यज्ञ में ले जाना और वहाँ फुलवारी का प्रसंग वर्णित है :–

राग शहाना– त्रिताल मध्यलय

स्थायी– छवि की छटा छाई चहुँ दिसि आज बगियन में री

अंतरा– सखियन संग इत सिय सोहे

राम अनुज की उत छवि मोहे

निरख मगन सखियन एरी[7]

राग शहाना – झपताल

स्थायी–गुरू चरण चित धरे लेन प्रसून चले

मूरति मधुर दोउ विदेह बगियन में

अन्तरा–सखियन संग सिय, पूजन गौर आई

माया ईश को मिलन आज बगियन में।[8]

फुलवारी प्रसंग की बंदिशों में पं0 झा जी ने राम को ईश एवं सीता को माया के रूप का दिग्दर्शन किया है। प्रसिद्ध संत रामानन्द जी ने भी ऊँ रामाय नमः को मूल मंत्र के रूप में स्थापित कर राम को ईश्वर, सीता की अचित् (प्रकृति) और लक्ष्मण को चित् माना।

धनुष यज्ञ में जब सभी राजा धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने में असमर्थ हुए तो गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए श्री राम ने धनुष भंग किया :–

राग कल्याण – धीमा त्रिताल

स्थायी– जब हरिधनुष धरे कर डग मग डोली परे धरनी धरे

अन्तरा– तोरे पिनाक सीय दुःख तारे

बूड़त बिरह विदेह उबारे

रामरंग नभ सुर जय जय करे।[9]

राग हमीर–त्रिताल

स्थायी– खन्डन कियो जबहि रघुराई

शिव को पिनाक नाक महि

पाताल यश छाय रहयो

अन्तरा– सखि गवहि सुर मधुर ताल–लय

सिय हरषी जयमाली चली लय

रघुवर उर जयमाल रामरंग

सुमन बरि सुर जय–जय कियो।[10]

राग भूपाली– त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी– हरि हारे हारे भूप सब

शिव धनु काहू न हारे

अन्तरा– निरखि विदेह हिये अकुलाने सुमिर

सीय बिलखाने बीर बिहीन भइ धरनी

कहि, शेष नरेश प्रचारे।[11]

शिव धनुष भंग कर श्री राम ने विदेह राजा जनक जी की व्याकुलता को शांत कर देवी सीता को सुख प्रदान किया। तत्पश्चात् राम और सीता का विवाह का अदभुत वर्णन पं0 रामाश्रय जी की बंदिशों में परिलक्षित होता है–

राग मारू विहाग– एकताल विलम्बित

स्थायी– शुभदिन आज बनरा बन आये राम सुजान

अंतरा– सिय सुकवारी कवन तप कीन्हें

'रामरंग' पायो वर भगवान।[12]

राग– मारू विहाग–एक ताल (मध्य लय)

स्थायी– आज रे बधाव बाजै अवध नगर में

अन्तरा– कुंवर चारि ब्याहि घर आये आनन्द

'रामरंग' डगर डगर में।[12]

राम और सीता के शुभ विवाह के पश्चात् उनके वन गमन का चित्रण पं0 झा जी अत्यन्त सुन्दरता से किया है। इस बंदिश में वन की स्त्रियों द्वारा सीता जी से उनके पति एवं देवर के विषय में पूछती है तो वह बड़े ही संकोच और लाज के साथ उन्हें उत्तर देती है :–

राग देवगिरी बिलावल– त्रिताल मध्य लयं

स्थायी– कौन तुम्हारे लागत कुंवर सांवरे गोरे

अंतरा– सकुचि सुनायो सिय देवर गोरे मेरे

रामरंग सैयां सांवरे।[13]

वन गमन प्रसंग में सबसे अनूठा प्रसंग राम, लक्ष्मण एवं माता जानकी को नाव द्वारा गंगा पार कराना गुरूजी की सम्पूर्ण राम राममयी रचनाओं मुझे राम केवट प्रसंग से संबंधित यह बंदिशें विशेषतया उल्लेखनीय प्रतीत होती है इनकी यह विशेषता क्रमवार कई बंदिशों में इस प्रसंग की कथा समाहित है :–

राग चारुकेसी– रूपक ताल विलम्बित

स्थायी– हे रघुवर राजा नइया

न चढ़ाऊं तोहे पग धोये बिना

अन्तराः पाहन नार भई राउर पग धूरि लगी

रामरंग तरनी बने धरनी मुनि पग धोये बिना।[15]

राग चारूकेसी –त्रिताल विलम्बित

स्थायी– उतरे प्रभुपार सुरसरि धार के

माणी मुदरी सिय दीन्ही उतार के

अन्तरा– कहि कहि हारे लखन सिय रघुराई

रामरंग केवट बोले 3 वचन सम्हार।[15]

राग–चारुकेसी – एकताल–मध्य लय

स्थायी– हमरी तुम्हारी राजन जाति–पाति केवट

की बिनती मानिये

अंतरा– हम तुम नाथ एक बिरादरी के

उतराई देय जात ना बिगारिये।[15]

राग चारुकेसी – त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी– उतराई ना ले हों तोरी प्रभु तोई पार उतारे की

अंतरा– भवधार के हो खेवइया

कीजो पार मोरी नइया

उतराई पार उतारे की।[15]

उपर्युक्त अनुपम बंदिशों के पश्चात् प्रातः स्मरणीय गुरूवर पं0 रामाश्रय झा जी ने लंका युद्ध एवं रावण हनन के पश्चात् लंका विजय की बंदिशों की रचना किया :–

राग– अड़ाना–एकताल विलम्बित

स्थायी– राम रघुबीर रणधीर कपि संग लिये

डंक दियो लंकगढ़ हलचल मचे

अंतरा– कह दस शीश लिय, देहु जानकी पिय

'रामरंग' रंगो जासों तेरो सब संकट कटे।[16]

राग– शंकरा एकताल विलम्बित

स्थायी– राजा राम सिय अनुज संग आवत

नगर विमान चढ़े।

अंतरा– असुर संघारि विभीषण तारे

रामरंग सुर मुनि जै जै करे।[17]

लंका– विजयोपरांत भगवान राम के अयोध्या आगमन एवं उनके राजतिलक के सुअवसर पर गुरूवर पं0 रामाश्रय झा मुखरित हुए :–

कुकुभ बिलावल झपताल (विलम्बित)

स्थायी– सिंहासन बैठे आज

बिराजे सिय रघुबीर

अंतरा– गुणि गंधर्व सुजस सुरगावे

रामरंग चंवर डुलावे लखन रणधीर।[18]

राग केदार– त्रिताल मध्य लय

स्थायी– राजा भये राम रघुराई

नभ सुर सुमन बरसे हरषाई

अन्तरा– अवध नगर आनन्द भयो है

मिल नर नारि मुदित मन गावे

'रामरंग' सरस बधाई।[23]

राग मारु विहाग– एकताल (मध्य लय)

स्थायी– नभ निरख आज री, अनुज सिय संग

आवत रघुराई विमान चढ़े

अंतरा– सुजस सुर गावे मुनि संघारे लंकपति

'रामरंग' जय जय करे।[24]

राग पटमन्जरी

स्थायी– अखिल भुवनपति राजन के राजा

आज अवध पुरी सिंघासन राजे

अंतरा– देव महादेव, विनती करत सब

असुर संघारि प्रभु निज जन उबारे।[19]

पं0 रामाश्रय झा जी की राममय बंदिशो की विशेषता है कि उन्होंने रामकथा के सुखद प्रसंगों को ही अपनी बंदिशों में स्थान दिया। कथा प्रसंगों से इतर पंडित जी ने कई बंदिशों में सात्विक भक्ति को स्थान दिया :–

यमनी बिलावल–एकताल

स्थायी– आई मैं तिहारी शरण राखिये कृपा निधान नारि हूँ गंवारी।

अन्तरा– जप तप मैं कछु न जानूं

'रामरंग' भरोसे तेरो अवध बिहारी।[20]

देवगिरी बिलावल– झपताल मध्यलय

स्थायी– अब लौं न आये सीता लखन राम

उन बिन सूनों लगत मोरे धाम

अंतरा– दस चारि बीते बरस जौ न आये

कैसे रहे 'रामरंग' तन प्राण।[21]

देवगिरी बिलावल– त्रिताल मध्य लय

स्थायी– अब भये राजा राम मोरे मनवा काहे को

अंतरा– सोच करे तुम पूरें गे मन काम।[22]

राग भूपाली त्रिताल– मध्य लय

स्थायी– मंगल करहु द्रबहु मो पर प्रभु

दसरथ के सुत अवध बिहारी

अंतरा– अगम अपार चरित तव रघुपति

लघु गति बरनि न जाही

कीजै सहाय रामरंग

सियबर बुद्धि विवेक सुधारी।[25]

राग तिरभुक्ति

स्थायी– जय जानकी अम्ब जननी जगत की

जनक सुता देहु भगति चरण की

अंतरा– जय नारायणी भुवनेश्वरी जय

रामरंग दीजै दान अपने चरण की।[26]

पं0 रामाश्रय झा जी ने इस प्रकार संगीत और साहित्य मूल उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करते हुए प्रतीत होते हैं। संगीत तथा साहित्य दोनों ही कलाओं में कलाकार अपनी कला की साधना में ज्यों–ज्यों बुधत्व को प्राप्त होता है त्यों–त्यों की उसकी कला यौवनत्व को प्राप्त होता है।

पं0 रामाश्रय झा जी की बंदिशों पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री मुकेश गर्ग जी कहते हैः–''झा जी की रचनाओं में कई बार भक्ति का प्रभाव जरूरत से ज्यादा दिखाई देता है। इस आधुनिक युग में भी हमारे शास्त्रीय संगीतज्ञों को काम भक्ति के बिना नहीं चलता है ताज्जुब की बात ज़रूर है, पर अब सच तो यही है।''[27]

प्रतिष्ठित लेखक श्री केशवचन्द्र वर्मा जी का कथन हैः– ''उनकी बंदिशों की उठान और मुखड़े अक्सर इतने आकर्षक हुआ करते हैं कि उनका सहज गायन ही राम की पूरी

छवि को उजागर कर देता है। पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' की सबसे चमत्कारिक उपलब्धि यह रही है कि उन्होंने सम्पूर्ण रामचरित मानस की कथा वस्तु और उनके प्रसंगों को संपूर्ण मार्मिकता के साथ बड़ी कुशलता से बड़े ख्याल, छोटे ख्याल की बंदिशों में अत्यन्त अनोखे एवं अभूतपूर्व ढ़ग से बांधा।[28]

पं0 रामाश्रय झा जी की बंदिशों में राम कथा तलाशना, राममय हो जाने जैसा ही है। पं0 उमाकान्त जी के शब्दों से अपनी भावना व्यक्त कर इस शोध पत्र का समापन करती हूँ उससे पूर्व गुरूवर पं0 रामाश्रय झा जी को अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा से नमन करती हूँ:– ''राम मेरी शक्ति है और दुर्बलता भी शक्ति इसलिये कि मैं निर्बल हूँ और राम निर्बल के बल है। राम के प्रति लोभ और काम मुझसे कभी नहीं छोड़ा जा सकेगा।[29]

तेरा तुझको अर्पण.....

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी भक्ति काव्य एवं गायन संगीत डॉ0 इभा सिरोठिया, साहित्य संगम पृ0 सं0 29
2. अभिनव गीतांजलि–भाग–5 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन निवेदन
3. अभिनव गीतांजलि–भाग–1 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन पृ0सं0 148
4. ....पृ0 सं0 156
5. अभिनव गीतांजलि–भाग–2 पृ0सं0 73 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन
6. अभिनव गीतांजलि–भाग–4 पृ0सं0 168 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन
7. अभिनव गीतांजलि भाग–2 पृ0सं0 55 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन
8. ....
9. अभिनव गीतांजलि भाग–4 पृ0सं0 182 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन
10. अभिनव गीतांजलि भाग–5 पृ0सं0 191 पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन
11. अभिनव गीतांजलि भाग–5 पृ0 सं0 223 पं0 रामाश्रय झा, संगीत सदन

प्रकाशन

12. अभिनव गीतांजलि भाग–1 पृ0सं0 185 पं0 रामाश्रय झा, संगीत सदन प्रकाशन

13. .... पृ0सं0 192 ....

14. .... भाग–1 पृ0सं0 80 ....

15. अभिनव गीतांजलि भाग–4 पृ0सं0 251 पं0 रामाश्रय झा, संगीत सदन प्रकाशन

16. राग शास्त्र–भाग–2 पृ0 सं0 32 डॉ गीता बनर्जी –संगीत सदन प्रकाशन

17. राग शास्त्र–भाग–1 पृ0 सं0138 डॉ गीता बनर्जी–संगीत सदन प्रकाशन

18. अभिनव गीतांजलि भाग–4 पृ0सं0 90 पं0 रामाश्रय झा, 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन

19. अभिनव गीतांजलि भाग–3 पृ0सं0 211 पं0 रामाश्रय झा, 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन

20. अभिनव गीतांजलि भाग–1 पृ0सं0 97 पं0 रामाश्रय झा, 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन

21. .... पृ0सं0 75 ....

22. .... पृ0सं0 76 ....

23. अभिनव गीतांजलि भाग–5 पृ0सं0 170 पं0 रामाश्रय झा, 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन

24. अभिनव गीतांजलि भाग–1 पृ0सं0 196 पं0 रामाश्रय झा, 'रामरंग' संगीत सदन प्रकाशन

25. अभिनव गीतांजलि भागसदन प्रकाशन

26. .... पृ0सं0 278 ....

27. संगीत, पं0 रामाश्रय झा अंक जनवरी 2011, पृ0सं0–8 संपादकीय, मुकेश गर्ग

28. .... पृ0सं0 21 केशवचन्द्र वर्मा

29. राघव राग पं0 उमाकान्त मालवीय पृ0सं0 39 आशु प्रकाशन